ISSN 2319-8095
PROGRESSIVE RESEARCH JOURNAL
VOL 9 No 01 DEC 2016

स्त्री विमर्श : स्त्री शिक्षा का महत्व व वर्तमान स्थिति

* डॉ0 अर्चना मिश्रा

स्त्री विमर्श का अर्थ है कि राजनीतिक, सामाजिक और शैक्षिक समानता का आन्दोलन विश्व के विभिन्न संस्कृतियों के निर्माण में नारी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्राचीन काल से ही समाज में नारी का स्थान आदर्शात्मक और मर्यादायुक्त था। धर्मशास्त्रों में भी नारी को सर्वशक्ति सम्पन्न माना गया है तथा विद्याशील, ममता, यश और सम्पत्ति की प्रतीक समझी गयी है। प्रजातंत्र की सफलता के लिए स्त्रियों के जीवन के हर क्षेत्र में सहभागी होना आवश्यक है। संविधान में उसे हर क्षेत्र में बराबरी का दर्जा दिया गया है इसलिए राजनैतिक समाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक सभी दृष्टि से स्त्री शिक्षा का बहुत अधिक महत्व है जो समाज स्त्री शिक्षा या स्त्री के अधिकारों की उपेक्षा करता है वह कभी भी उन्नति नहीं कर सकता है।

नेपोलियन का कहना था कि " तुम मुझे सुशिक्षित माताएं दो मै एक सुशिक्षित राष्ट्र का निर्माण कर दूंगा" वही ' जगजीवन राम' का कथन था कि एक कन्या को पढ़ा देने से आगे आने वाली पीढ़ी सुशिक्षित होगी।

अतः आधी आबादी यानी स्त्री को पुरूष के समान योग्य और सुशिक्षित होने की आवश्यकता है। एक सुशिक्षित नारी ही व्यक्तिगत परिवार की समाज की और राष्ट्र की समस्याओं का उचित हल निकाल सकती है। माँ बच्चे की प्रथम शिक्षिका होती है उसके दिये संस्कार जीवन पर्यन्त बच्चे के साथ रहते है। नारी समाज की शक्ति है साथ ही वह दया और त्याग की मूर्ति है वह देश की संस्कृति, धर्म, साहित्य, कला आदि का स्तम्भ है। माँ होने के नाते हर शिक्षित माँ अपने बच्चे की रूचि, क्षमता एवं प्रवृत्ति के आधार पर ही उसका सही विकास करने में सहायक होती है। संक्षेप में स्त्रियाँ राष्ट्र की मेरूदण्ड है।

जहाँ तक महिला शिष्य की बात है तो आज 21 वीं सदी में विश्व के अधिकांश पिछड़े देशों ने भी इसके महत्व और अहमियत को पहचाना है। ' स्वामी विवेकानन्द का कहना था कि " स्त्रियों की बहुत सी समस्याएं है पर उनमें एक भी ऐसी समस्या नहीं है जो उस जादू भरे शब्द शिक्षा के द्वारा ही हल हो सके। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 जवाहर लाल नेहरू के अनुसार लड़के की शिक्षा एक व्यक्ति की शिक्षा होती है। वही लड़की की शिक्षा सम्पूर्ण परिवार की शिक्षा होती है।" एक शिक्षित स्त्री शिक्षा का मूल्य समझती है माँ होने के नाते हर शिक्षित माँ अपने बच्चे की रूचि, क्षमता, प्रवृत्ति के आधार पर उसका सही विकास करने में सहायक होती है।

* एसो0 प्रो0 बी0एड0 विभाग रतनसेन डिग्री कालेज बांसी सिद्धार्थनगर(उ.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

नारी शिक्षा के संदर्भ में देखे तो वैदिक काल में नारी शिक्षा उन्नति पर थी। विभिन्न य
कार्यों में नारी भाग ले सकती थी गार्गी, मैत्रेयी, अपाल आदि ऐसी ही स्त्रियों थी। बौद्ध क
में भगवान बुद्ध द्वारा नारी शिक्षा को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया गया संघमित्र, शु
अनुपमा इस समय की विदुषी स्त्रियां थी मध्यकाल में पर्दा प्रथा का प्रारम्भ हो जाने से उ
घराने की महिलायें ही शिक्षा प्राप्त कर सकती थी जिनमें राजघरानें से सम्बन्धित नूरजहाँ रजि
सुल्तान मुमजात महल आदि विदुशी स्त्रियाँ थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात आधुनिक युग विकास का विज्ञान का युग है। यद्यपि इ
पूर्व इसाई मिशनरियों गैर–सरकारी संगठनों द्वारा स्त्री शिक्षा हेतु आन्दोलन किये गये।
1954 ई0 के वुड के घोषणा–पत्र तथा 1882 के शिक्षा आयोग में भी स्त्री शिक्षा के प्रगति
लिए सरकार से कुछ सिफारिशें की गयी सन् 1904 में श्रीमती एनी बेसेन्ट ने बनारस से
हिन्दू बालिका विद्यालय की स्थापना की। सन् 1917 से 1947 की अवधि में गांधी जी तथा
राष्ट्रीय नेताओं नें स्त्री शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण कार्य किये।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात विभिन्न शिक्षा आयोगों एवं राष्ट्रीय समितियों द्वारा स्त्रियों
शैक्षिक अवसरों की समानता के प्रसार के लिए सुझाव व सिफारिशें की गयी। जि
विश्वविद्यालय आयोग माध्यमिक शिक्षा आयोग, राष्ट्रीय समिति 1958 श्रीमती हंसा मेहता
भक्त वत्सलन समिति कोठारी आयोग आदि प्रमुख है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में महिला निरक्षता को दूर करने को सर्वोच्च प्राथमि
बताया गया। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन 1988 के तहत शिक्षा को महिला सशक्तिकरण
आवश्यक शर्त माना गया।

स्त्री शिक्षा वर्तमान स्थिति

सरकार ने स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक कार्यक्रम तथा योज
चलाई है परन्तु फिर भी अपेक्षित विकास एवं सफलता हासिल नहीं हो सकी है। आज भी
की अनेक बालिकाएं ऐसी है जो अपने पूरे जीवनकाल में स्कूल का मुह न ही देख पायें
बालिकाएं किसी तरह स्कूल तक पहुंच भी जाती है तो भी वो आगे की पढ़ाई जारी नहीं
पाती है इसका मुख्य कारण है समाज की महिलाओं के प्रति दोयम दर्जे की मानसिकता क
भारतीय समाज आज भी कन्या को पराया धन मानता है और उसे बोझ समझते हुए उसके
विवाह को अपनी जिम्मेदारी समझता है इसके अतिरिक्त बालिकाओं को घर के कामका
हाथ बटाने हेतु ही उपयुक्त समझने की मानसिकता भी स्त्री शिक्षा को कुप्रभावित कर रह
स्त्री शिक्षा की जो वर्तमान परिस्थिति है विशेषकर निर्धन वर्ग व ग्रामीण क्षेत्रों में उनके लिए
हद तक महिलाएं ही जिम्मेदार है आज घर की महिला ही यह मानती है कि लड़की को
के पश्चात दूसरे के घर जाना है अतः वह पढ़ लिख करके क्या करेगी लड़को को
लिखना चाहिए उसे घर को सम्हालना है।

Scanned with OKEN Scanner

समाज की संरचना स्त्री तथा पुरूषों के सामूहिक दायित्व पर आधारित होती है लेकिन स्त्री उसमें भी आज सबसे नीचे पायदान पर खड़ी है विशेषकर ग्रामीण व निर्बल वर्ग में आज भी महिलाएं दमित शोषित वंचित है इनका कारण स्त्रियों की शिक्षा के प्रति समाज की उदासीनता है।

आज हम स्वतंत्रता के पश्चात स्त्रियों की शिक्षा को आंकड़ों के संदर्भ में देखे तो सन् 1950 में स्त्री साक्षरता दर मात्र 18.33 % थी जो आज 2011 में 50 % हो गयी है लेकिन यह आंकड़ा भी हमें उत्साहित नहीं करता है आज भी बहुत सी लड़कियां स्कूल कालेज का मुंह नहीं देख पाती है।

भारत में महिला साक्षरता प्रतिशत जो 2001 से 2012 के बीच का है इसे हम निम्नलिखित तालिका से देख सकते हैं–

भारत में साक्षरता (2001 व 2011)

वर्ष	महिला साक्षरता दर	पुरूष साक्षरता दर	कुल साक्षरता दर
2001	53.60	75.80	64.80
2011	64.60	80.90	73.00

इसी प्रकार से ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में यदि हम महिला/पुरूष साक्षरता दर को देखना चाहे तो 2001 से 2012 के बीच के समय से इसका रूप कमोवेश जो था वह निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है :–

ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में महिला व पुरूष साक्षरता दर

वर्ष	महिला साक्षरता		पुरूष साक्षरता	
	ग्रामीण	शहरी	ग्रामीण	शहरी
2001	46.1	72.9	70.7	86.3
2011	57.9	97.1	77.2	88.8

इस प्रकार से हम देखें तो आज के परिदृश्य में स्त्री शिक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता आयी है आज की नारी राजनीति कारोबार कला तथा नौकरियों में सफलता के नये आयाम गढ़ रही है भूमण्डलीय दुनिया में भारत और यहाँ की नारी में अपनी एक नितान्त सम्मानजनक जगह कायम कर ली है आँकड़े दर्शाते है कि प्रतिवर्ष कुल परीक्षार्थियों में 50 % महिलाएँ डाक्टरी की परीक्षा उत्तीर्ण करती है आजादी के बाद लगभग 10 % महिलाएं विभिन्न राज्यों की मुख्यमंत्री

Scanned with OKEN Scanner

बन चुकी है। भारत के अग्रणी साफ्टवेयर उद्योग में 12 प्रतिशत पेशेवर महिलाएं है और राजनीति खेत, पायलट, उद्यमी सभी क्षेत्रों में जहाँ वर्षों पहले तक महिलाओं के होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी वहाँ सिर्फ नारी स्वयं को स्थापित ही नहीं कर पायी है बल्कि वह सफल भी हो रही है।

आज शिक्षित महिलायें को राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय होने में बहुत मदद मिली है। शिक्षा ने उन्हें आर्थिक, राजनैतिक व सामाजिक न्याय तथा पुरूष के साथ समानता के अधिकारों की मांग करने को प्रेरित किया। महिला शिक्षा समाज का आधार है समाज को पुरूष को शिक्षित करने का लाभ केवल मात्र पुरूष को होता है जबकि महिला शिक्षा का स्पष्ट लाभ परिवार समाज एवं सम्पूर्ण राष्ट्र को होता है।

वर्तमान समय में भारतीय सरकार द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए अनेक कार्यक्रम एवं योजनाओं का संचालन तो किया जा रहा है। लेकिन इन योजनाओं का क्रियान्वयन निचले स्तर तक उचित ढंग से न पहुंच सकने के कारण स्त्रियों को अपेक्षित लाभ नहीं मिल पा रहा है। यह सत्य है कि वर्तमान समय में स्त्रियों की स्थिति में काफी बदलाव आए है लेकिन फिर भी वह अनेक स्थानों पर पुरूष प्रधान मानसिकता से पीड़ित हो रही हैं इस संदर्भ में युगनायक एवं राष्ट्र निर्माता स्वामी विवेकानन्द का यह कथन उल्लेखनीय है किसी भी राष्ट्र का प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है वहाँ की महिलाओं की स्थिति। हमें नारियों की ऐसी स्थिति में पहुंचा देना चाहिए जहाँ वे अपनी समस्याओं को अपने ढंग से स्वयं सुलझा सके।"

जहाँ तक महिला शिक्षा की बात है तो आज 21वीं सदी में विश्व के अधिकांश पिछड़े देशों ने भी इसके महत्व और अहमियत करें पहचाना हैं हमारे मानवीय साधनों के पूर्ण विकास परिवारों के सुधार बच्चों के चरित्र निमार्ण, देश के उत्थान, आदि के लिए महिलाओं की शिक्षा पुरूषों की शिक्षा से किसी भी रूप में कम महत्वपूर्ण नहीं है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. वर्मा सरोज कुमार (2008) : स्त्री सशक्तिकरण के भारतीय संदर्भ योजना वर्ष 53 अंक सूचना और प्रसारण मत्रांलय नई दिल्ली।
2. पाण्डेय, बी0बी0 भारतीय शिक्षा की समस्याएँ तेतरा विद्यावती शैक्षिक प्रकाशन गोरख
3. पाठक पी0डी0 बाल्यावस्था एवं विकास अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
4. गुप्ता अरूणा उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक आलोक प्रकाशन लखनऊ।
5. चन्द्रपाल (2005) : "महिला शिक्षा के अनसुलझे पहलू" कुरूक्षेत्र वर्ष 51 अंक 5 और प्रसारण मंत्रालय नई दिल्ली।

Scanned with OKEN Scanner